धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अक्तूबर - 2011

* भगवान देवात्मा के फरमान
* सेवकी का हक अदा करें।
* सत्य धर्म बोध उत्सव
* कनल जी लिखते हैं:
* शुभ संग्राम

भगवान देवात्मा के फरमान

- धर्म की सोसाईटी धर्म लाने के लिए है। उसमें धर्म के नियम काम करेंगे। मक्कारी, राजनीति, धोख़ेबाजी वगैरा इसमें काम नहीं आएगी।
- मैं परोहित रखना नहीं चाहता। मैं एक भी परोहित नहीं रखूंगा सब दफा हो जाएं।
- स्थगित जनों को बहाल करना, गिरे हुओं को उठाना, परिवारों को समाज के साथ जोड़ना, इत्यादि यह सब कर्मचारी का काम है।
- अगर तुमने चपरासी बनने वाले जनों को विकासार्थी बना लिया तो यह ठग्गी है और शरारत है, कपटता और मक्कारी है।
- हरेक सभा का अपना कोई लक्ष्य होना चाहिए। कोई सभा ऐसी न हो जिसमें सच्चे अर्थो में आत्माओं में उच्च परिवर्तन न आवे। लोग तन-मन, धन अर्पण करने के लिए तैय्यार न हों। ऐसी सभाएं हम नहीं चाहते, कि सिर्फ कथा की तरह हों। वह हमें बेवकूफी की बात मालूम होती है और बेवकूफी की बात हम अपने सामने होने देना नहीं चाहते।
- मैं काम के आदमी चाहता हूं, बाकी सब दफा कर देना चाहता हूं। हरामख़ोर, धोखेबाज जनों को वजीफे न दिए जाएं, चाहे दो ही आदमी हों (मगर काम के हों)।
- श्रीमान धर्म बल जी के किसी कागज़ के पेश करने पर भगवान ने फरमाया :-
- क्या कौंसल में यह भी होता है, जब दिमाग साथ न देता हो तो एक के पीछे हां में हां मिला देते हो, या कुछ Opposition (विरोधता) भी होती है।
- समाज का रु० मेरे पास अमानत है- उसको अगर बिगाड़ूं, तो मेरा पतन होगा। तो मेरा यह फर्ज़ है, कि समाज का कुछ नुकसान न हो जाए। सन्तरी जो बैंक में पहरा दे रहा है, यदि वही नुकसान करने लगे तो बैंक कैसे बचेगा?

नोट:- परम पू० भगवान देवात्मा की यह तड़प उस समय की है, जब उनके पास चोटी के कर्मचारी थे, आज की हालत देखकर उनके दुख और सदमें का हम संवेदन हीन, स्वार्थी, अंह और नीचघृणा के पुतले अन्दाज़ा भी नहीं लगा सकते।

धर्म जीवन

खण्ड 24 अंक 10

अक्तूबर - 2011

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सेवकी का हक अदा करें।

आज धर्म समाज में जो अभाव पैदा हो गए हैं, यदि हम उनकी तरफ आंख मूंद कर और बाहर के धर्मो की तरह इस विश्वास पर चल रहे हैं कि यदि हम अपने तथाकथित नेताओं के विरूद्ध (उनकी कितनी बड़ी गल्तियां क्यों न हों) कुछ कहेंगे तो हम समाज के प्रति वफादारी को खो बैठेंगे, तो हम सच्चे, साहसिक और जिन्दा सेवक कहलाने के हकदार नहीं हैं। वास्तव में जब निजी स्वार्थो, सत्तालिप्सा, निज मान प्रशंसा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की हवस अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है, इस सब के सामने समाज का हित पूर्णत: लुप्त हो जाता है, जो भी समाज के हित में कुछ बोलने का साहस करता है, उसे अपना प्रतिद्वन्द्वी समझकर, उसको समाज से काट दिया जाता है, या काटने का भय पैदा कर दिया जाता है। कुछ लोग स्वयं पदवियां रखने या पाने के लिए समाज को पतन के गढ़े में गिराने के लिए तत्पर बैठे हैं। क्या यही हमारी समाज के प्रति निष्ठा है? क्या हम अपने खोल से बाहर आकर उदार विचारशील नहीं बन सकते? हम सच्चाईयों को दबाए रखकर अपनी स्वच्छ छवि कब तक बनाए रख सकेंगे? क्या कुछ भी समाज में ख़मीर नहीं बचा जो मैदान में कूदें और समाज के इस पतन के वास्तविक कारणों को समझने का प्रयत्न करें।

यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमारी यह सोच हमारा नैतिक मुर्दापन घोषित करती है। हम किसी इन्सान से क्यों जुड़ें? समाज के सिद्धान्तों को मुख्य रखकर सच्चाई की छानबीन क्यों न करें? समाज के सेवकों को पूर्ण अधिकार है, परन्तु जब हमारा देश ही मुर्दा है, जो सब प्रकार के दुष्कर्म करने वालों, घोटाले करने वालों, देश के दुश्मनों को भी नेता बनाकर चलता है, तो हमारी समाज जो छोटी सी ईकाई है, इसमें जानदार आदमी कहां से पैदा होंगे? यदि 10 आदमी भी कुछ जानदार निकल आएं और पक्षपात रहित होकर समाज का हित सोचें तो आज भी समाज का रुख बदल जाए। ऐसे जन हों जिनमें यह साहस हो कि सच्चाई किसी के प्रति भी सामने आए, चाहे वह मेरा या आपका कितना निकटी हो, उसको प्रदर्शित करना हमारा कर्त्तव्य है।

क्या कुछ जनों में भी इतनी जान नहीं? पूजनीय भगवान किस प्रकार तड़पते होंगे, क्या इसका अन्दाजा है हम लोगों को? उनकी एक एक देव वाणी में कितनी व्याकुलता है, परन्तु अपनी गुटबाजी, षडयन्त्रकारी नीतियों, स्वार्थ वा सुख सुविधाओं के चक्कर में उसको पढ़ने की फुरसत किसे है?

निम्नलिखित विषयें पर हमें सोच विचार

करने की आवश्यकता है: -

1) सर्वप्रथम हमारी समाज में लीडरशिप का अभाव है। हमारे देशवासियो में बहुत क्षमताएं वा योग्यताएं है, परन्तु सशक्त, बुद्धिमान, साहसी, सब प्रकार से ईमानदार, रचनात्मक विचार रखने वाले, पक्षपात और पार्टीबाजी से रहित, अपने पास काम करने का ठोस एजण्डा रखने वाले, सहनशील, निज स्वार्थ से ऊपर उठ सकने वाले नेता के बिना इतना बड़ा देश पतन की ओर बढ़ रहा है। यही दशा हमारी समाज की है। उपरोक्त गुणों को अधिक से अधिक रखने वाला जन समाज को आगे ले जा सकता है। इस मजबूत और दूरदर्शी नेता की आवश्यकता है। मुर्दा नेता नहीं चाहिए।

2) प्रत्येक नेतागण को अपनी ग़ल्तियों का विश्लेषण करना होगा इस बात से सन्तुष्ट हो जाना कि फलां आदमी की ग़ल्तियों से समाज डूबी है, वह सरासर ग़ल्त है। अब अकाली दल इस प्रचार से सन्तुष्ट होता है कि आप्रेशन ब्ल्यू स्टार कांग्रेस ने किया, इसलिए वह दोषी रही है। यह दोष निराधार नहीं। कांग्रेस ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए भिंडरावाला पैदा किया और उसकी सजा बखूबी कांग्रेस को मिली और मिल रही है। इन्दिरा गांधी की हत्या इसका सबूत है, परन्तु अकालियों को ब्ल्यू स्टार की ज़िम्मेवारी से कैसे मुक्त किया जा सकता है। जिन्होंने पहले भिंडरावाले को दरबारा साहिब परिसर में शरण दी और उसके बाद आंतकवादियों को दरबार साहिब परिसर को अपना गढ़ बनाने तथा प्रदेश में एक स्वतन्त्र धर्माधारित राज बनाने के लिए और भय की भावना पैदा करने के लिए इस्तेमाल करना शुरू किया जिससे देश की एकता और अखण्डता को वास्तविक ख़तरा उत्पन्न हो गया था। दोनों ने अपने अपने स्वार्थो के लिए भिंडरावाले का इस्तेमाल किया, जब स्वार्थ सिद्धि अपना नाच नचाती है तो परिणाम तो भुगतने ही पड़ते हैं। सोनियां गांधी ने तो शाब्दिक क्षमा मांग ली, परन्तु क्या अकाली भी क्षमा मांगेगें, जो अपने ही धर्म स्थल को अपवित्र करने का कारण बने? जिसके कारण ही आप्रेशन ब्लैक थंडर हुआ? कभी नहीं मांगेंगे। क्षमा मांगना भी अच्छा है, परन्तु अपनी गल्तियों पर विचार करना और उनसे जो भयंकर परिणाम पैदा होते हैं, उनके लिए पश्चाताप करना और खुले आम उनको दूर करने के लिए तत्पर होना अलग बात है।

जब सब नियम ताक पर रख कर समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं को निकाला गया, सब चुप रहे उसी का नतीजा आज भुगत रहे हैं। कुछ सशक्त कार्यकत्ताओं को निकालने और अपनी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होने के लिए जैसे एक दूसरे का प्रयोग किया गया है उसमें क्या एक जन दोषी है? सबके सब दोषी हैं। समाज के दर्जनों परिवार समाज से दूर हो गए हैं जब तक सब अपनी ग़ल्तियों का विश्लेषण नहीं करेंगे और उनको सुधारने की बजाए अपने आपको मासूम, निर्दोष सिद्ध करने में लगे रहेंगे, समाज का हित सम्भव नहीं।

3) यदि नेतागण अपने अपने स्वार्थो और सत्ता लिप्सा में ऐसा नहीं कर सकते, तो क्या सेवक-गण मूक दर्शक बनकर समाज की तबाही देखते रहेंगे? क्या किसी में भी धर्म की जान और अपने अद्वितीय गुरु के लिए कुछ भी श्रद्धा नहीं बची। ं क्या धर्म समाज का यही स्वरूप हमें मन्ज़ूर है। सोचें, आगे बढ़ें। दिल करता है कि देवगुरू का झण्डा लेकर एक एक सेवक के पास फरयाद की धूनी रमा दूं कि जागो, यह ज़िन्दगी चन्द रोज़ा है, इसमे कुछ करके मरें, मरने से पहले ही मुर्दा न हो जाएं।

4) हमारी धर्म समाज की जान और प्राण अद्वितीय आविर्भाव देवात्मा के पाप और झूठ नाशक, हित और सत्य के विधायक देव प्रभाव हैं। आज देव प्रभावों की प्राप्ति के इच्छुक, साधकों का और देव प्रभाव संचारक प्रचारकों का पूर्ण अकाल पड़ चुका है। जिसके कारण मोटी बुराईयां यहां तक कि मूल सेवकी की प्रतिज्ञाओं का निरादर और झूठ बुराई की पोषकता का धोर प्रचलन है। नये आत्माओं में परिवर्तनों का क्रम पूर्ण रूप से बन्द हेा चुका है। इससे धर्म समाज का भविष्य अन्धकार-मय हो गया है। ऐसा लगता है कि केवल नाम के सिवाय हमारी समाज की समस्त विशेषताएं लुप्त हो रही हैं। यह सबसे गंभीर विषय है जो सेवकों के फिकर और सोच विचार की व्याकुलतापूर्ण मांग करता है।

5) हमारी संस्थाओं की दुर्दशा हो रही है। जो हमारी संस्थाओं के प्रबन्धक बनाए गए हैं जिनका शिक्षा से दूर दूर का भी कोई रिश्ता नहीं। वह इस बात से खुश हैं कि जब वह जाते हैं, तो वहां के प्रबन्धक उन्हें फाईव स्टार होटल जैसी सुविधाएं देते हैं, वहां बच्चों के माता पिता की खून पसीने की कमाई को अपने आकाओं को खुश करने के लिए पानी की तरह बहाया जाता है। इसलिए अपने चहेतों को पद देने के लिए सारे नियमों को ताक पर रखा जाता है। जिस जन से जान बचाने के लिए दर दर भटकते रहे, वह अब शीर्ष का नेता नज़र आने लगा है। ऐसे स्वार्थ के घिनौने नज़ारे सब सेवक देख रहे हैं, संस्थाओं शिक्षाविदों, अध्यात्मिक नेताओं को रहनुमाई की आवश्यकता है। केवल संस्थाओं को पैसा बनाने का केन्द्र बना छोड़ा है। बच्चों का भविष्य ताक पर लग गया है। सब मनुष्यों में अपनी अपनी योग्यताएं होती हैं, यदि उनका सही इस्तेमाल किया जाए तो वह योग्यताएं अपने करश्मिें दिखाती है, परन्तु उनकी योग्यताओं को न पहचानकर उन्हें दूसरे कामों मे लगाया जाए, जो उनमें योग्यता ही नहीं, तो उनकी अपनी योग्यताएं तो समाप्त होंगी ही, जहां काम करेंगे वहां भी भट्ठा बैठ जाएगा।

6) सबसे बड़ा खतरा किसी भी संस्था को तब पैदा होता है, जब हम अपने ही सामने होने वाले पतन को नज़र अन्दाज करते हैं। बिना ज़िम्मेवारी लिए ही ताकत हथियाना या रखना चाहते हैं, तो संस्था को बेपनाह हानि पहुंचाते हैं, क्योंकि उनका लक्ष्य किसी तरह सत्ता में रहना होता है और इसके लिए वह पक्षधारियों, मौका परस्तों, स्वार्थियों का एक गुट तैयार कर लेते हैं, संस्था या समाज का क्या हश्र होगा, इस तरफ सोच ही समाप्त हो जाती है। क्या हम सेवकों में इतना हौसला है कि वर्तमान समस्याओं के कारणों की तह तक पहुंच सकें?

हरी जय सिंह जी ने एक एडिटोरियल में लिखा था:-

"To revive India that is Bharat we will have to Cultivate the spirit of enquiry."

हिन्दी अनुवाद :- "यदि हम भारत को दुबारा जिन्दा करना चाहते हैं तो हमें छानबीन (enquiry) की भावना को पैदा करना होगा।

इस बात से ऊपर उठें "खाता न बही, जो केसरी कहे वही सही" इससे समाज नहीं चलेगी। क्या यह ठीक है कि ग़ल्त बात देख लेना, फिर उसे न करना यह साहस के अभाव के चिन्ह हैं।

वास्तव मनुष्य वही है जो किसी दबाव के आगे न झुके, पिछलगू न बने। केवल अपने पक्षधरों की प्रशंसा के कसीदे ही न निकालता रहे।

प्रशंसा मात्र करने से किसी समाज का विकास नही हो सकता। अपनी कमज़ोरियों का बार बार आंकलन करने से ही कोई समाज आगे बढ़ सकता है।

कहने को हम आज़ाद देश मे रहते हैं, परन्तु गुलामी हमारी नस नस में भरी हुई है। हम मानसिक तौर पर अनेक प्रकार से गुलाम हैं।

हमारी यह गुलामी हमारी समाज की तरक्की में बाधक है। सशक्त, रचनात्मक आन्दोलन के द्वारा सामाजिक पुनर्निर्माण हो सकता है। आज समय का तकाज़ा है कि हम अपनी मान्यताओं का निडर होकर विवेचन करें जिससे समाज को हानि पहुंची है और पहुंच रही है। नही तो हम नैतिक पतन की ओर बढ़ रहे हैं और बाहर की दुनिया से भी बदतर हालत हमारी समाज को कई पहलुओ में हो चुकी है। हम समाज के साथ धोखा कर रहे हैं।

यह सब तभी सम्भव है कि एक ओर समाज के पतन का हार्दिक दुख हो, फिर परम पू० भगवान देवात्मा से हार्दिक सम्बन्ध बनें, गुरू महराज के प्रभावों को पाकर उनसे बार बार प्रार्थनाशील होकर सही मार्ग पर चलने का प्रयत्न हो और महान आत्म बली से उस आत्मिक बल को प्राप्त किया जाए जिससे बुराई के आगे किसी भी सूरत में न झुकने का प्रण हो, चाहे उसमें हमारी कितनी भी हानि क्यों न हो। केवल ग़ल्त नीतियों की निन्दा करने से न कोई हमारा भला हो सकता है, न समाज का। अपने स्वार्थो की अहुति देनी होगी, तभी कुछ विकास सम्भव है।

सुरजीत बराड़

पाठकों की ओर से

1) **<u>धर्म जीवन पत्रिका के पाठक संजीव कुमार पंचकूला से लिखते हैं: –</u>**

हमे "धर्म जीवन" पत्रिका लगातार मिल रही है। हमें इसके लेख बहुत पसन्द हैं। विशेष कर मिसिज़ सुरजीत जी बरार के लिखे लेख बहुत ही अच्छे लगते हैं।

इससे पता लगता है कि किसी जन के विचार किस प्रकार महान हैं, हम भी उन्हें अपने जीवन में ढालने की कोशिश करते हैं। हम इसको आगे भी पढ़ते रहना चाहते हैं। इसका चन्दा आदि भेज रहे हैं।

2) **<u>जबलपुर मध्य प्रदेश से एक साथी एच. एल. भारद्वाज लिखते हैं: –</u>**

सम्मान के योग्य श्रीमान जी,

सत्य देव की जय।

मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आप मुझे "धर्म जीवन" नामक हिन्दी पत्रिका निरन्तर भेज रहे हैं। मैं इसका 10 साल का चन्दा 500 रू० चैक द्वारा भेज रहा हूं।

3) **<u>फरीदकोट से पुराने धर्म सम्बन्धी Princial S.N. Bali ji लिखते हैं: –</u>**

मुझे देव समाज की सभाएं और संगत न मिल पाना बहुत दुखदाई अनुभव होता है। परन्तु फिर भी आप जी की दोनों मासिक पत्रिकाओं में जो कीमती लेख और सामाजिक साहित्य मेरी तसल्ली का बहुत बड़ा साधन है। इन में से मुझे रूह की बहुत ज़रूरी खुराक मिल रही हैं। हम ज़िन्दगी के आख़री पड़ाव पर उनके सहारे ही जी रहे हैं।

कनल जी लिखते हैं: -

1) निर्बुद्धिता एवं नीच जीवन ऐसे कारण हैं कि जो घरों, समाजों, संस्थाओं और उच्च लक्ष्यों को नष्ट कर देते हैं।

2) निर्बुद्धितां अनेक सरकारों एवं संस्थाओं के नाश का कारण बनी है। इसी से हम में से उन सभी व्यक्तियों के लिए, जो कि किसी बड़ी संस्था अथवा किसी बड़े लक्ष्य में निर्णायक भूमिका रखते हों, व्यवहारिक बुद्धि का आलोक सबसे ज़रूरी चीज़ है।

3) जब नेतागण जीवन के अच्छे नियमों का उल्लंघन करते हैं, तो बड़े 2 कार्य और बड़ी बड़ी संस्थाएं नष्ट हो जाती हैं। भूलें करते हैं अथवा कार्य के साथ विश्वासघात करते हैं, तो उसके भयंकर परिणाम होते हैं।

4) मैदाने जंग में लड़ी जाने वाली लड़ाईयों में नेता का पतन एक विपत्ति है। परन्तु एक नैतिक नेता का पतन एक विभीषिका है। नैतिक समाजों के लिए दो ज़रूरी शर्तो का पूरा होना अवश्यक है।

(1) प्रथमत: उसे सिद्धान्तों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने वाला एक सच्चा नेता चाहिए

(2) दूसरी ओर उसे ऐसे वातावरण की अवश्यकता है कि जिसमें नैतिक पतन किसी मूल्य पर भी सहन न किए जाएं।

5) एक नैतिक भूल को सहन करना समस्त समाज के मनोबल की टूटन की सहज करने जैसा ही होता है। नैतिक पतन को क्षमा कर देने की नीति का अर्थ है अनैतिक सिद्धान्तों के लिए नैतिक सिद्धान्तों की बलि दे देना।

6) वास्तव में नीच आदर्शो के लिए उच्च अदर्शो की बलि चढ़ा दी जाती है। प्राय: ऐसा होता है कि संस्थापक की मृत्यु से कार्य को बहुतु हानि पहुंचती है। कारण यह है कि फिर दुर्बल एवं दुनियवी व्रृति वाले लोग उसके कर्ता धरता बन जाते हैं, जो कि कुछ व्यक्तियों को अपने साथ बनाए रखने के लिए एक के बाद एक नैतिक भूलों को सहन करते चले जाते हैं।

7) जब अयोग्य शासक गद्दीनशीन हुए, तो बड़े बड़े सम्राज्य भी नष्ट भ्रष्ट हो गए। बड़े बड़े कार्यो और धार्मिक संस्थाओं की यही हालत है। जब कोई शुद्र, अंहकारी व्यक्ति सत्ता की कुत्सित वासना के वशीभूत होकर योग्य व्यक्ति के हाथों से सत्ता छीन लेता है, और उसे अयोग्य हाथों में धारण कर लेता है, तो वह महान कारज की तबाही कर डालता है। पर वह अंहकारी, अयोग्य व्यक्ति इस ग़ल्त विश्वास से जीता है कि वह सर्वथा योग्य था।

8) सामान्य व्यक्ति की मानसिकता ऐसी होती है कि वह अयोग्य व्यक्ति बड़े बड़े पदों को हथियाने के अकांक्षी हो उठते हैं और इस प्रकार इस प्रक्रिया में उसी कार्य का नाश कर बैठते हैं जिसके विकास के वह इच्छुक होते हैं।

रोशनी की किरण में

आत्मिक जगत में मनुष्य का सबसे भयानक शत्रु, उसका अपना अंह अनुराग है। हम सब मनुष्य बचपन से ही अंह अनुरागी हैं। ज़ोर लगाने पर भी हमारी किसी नीचता, ग़ल्ती, कमी, दोष, अपराध और हानि को देशने में अहं का अनुराग भयानक अन्धेरे पैदा किए रखता है और ज़ोर लगाने पर भी हमारा ध्यान किसी नीचता, ग़ल्ती, कमी, दोष, अपराध वा हानि की ओर नहीं जाता। अंह अनुराग पहाड़ की तरह हमारे भले के मार्ग मे खड़ा रहता है। अंह का सच्चा बोध और उससे किसी सीमा तक निवृति धर्म प्राप्ति के मार्ग में बहुत बड़ी प्राप्ति है और बड़ा सौभाग्य है।

नीचे हम अपने एक पुराने धर्म सम्बन्धी का एक साधन दे रहे हैं, रोशनी की किरण में अपने अंह की Tip of Icebirg, ज़रा थोड़े से समय में केवल दिखाई ही दी है। यह भी मनुष्य की खुशनसीबी है। काश! वह और रोशनी के अधिकारी बनने के राह पर पड़ सकें, और उन्हें अपने अंह अनुराग का प्रकृत रूप दिखाई दे सके, और वह उससे मुक्त होने के लिए सच्चे संघर्ष में पड़ सकें। उनके सच्चे भले का मार्ग खुल सकें। हम अपने धर्म सम्बन्धी को ऐसे साधन के लिए मुबारक देते हैं यह साधन निम्नलिखित है: -

हे देव! आपकी शरण पाकर भी मैं प्रतिदिन प्रात: काल अपना निज का आत्मिक साधन भक्ति - भाव से नहीं करता। हानि परिशोध के आसुँओं से आत्मा को शुद्ध नही करता। मेरा मन सांसारिक वासनाओं में फंसकर इधर - उधर भटकता रहता है।

अपनी प्रशंसा सुनने को तो मेरा दिल ललचाता है और सर्वदा यही चाहता हूँ कि सभी मुझे अच्छा कहकर मेरी प्रशंसा करें। किन्तु आपकी भक्ति में मेरी श्रद्धा बहुत कम है। ऐसी मेरी मूर्खता है। जिन पापों को मैने बड़े चाव से किया, उन्हे तो हृदय में छिपाकर रख लिया, तथा किसी सतसंग सभा में आपके देव प्रभावों के मिलने पर मुझसे कोई तुच्छ काम बन जाए तो उन्हें सबको सुनाता फिरूं। मैं सर्वदा यही चाहता रहता हूँ, कि संसार में मुझे महात्मा समझें। मैं कभी जो कुछ सतकर्म करता हूँ उन्हे खेत में बचे पड़े अनाज़ (सिला) के दानों की भान्ति चुनकर सुरक्षित रख लेता हूँ, किन्तु हृदय में छिपा दम्भ (अहंकार) उसे भी बाहर निकाल फैंकता है। अर्थात मिट्टी में मिला देता है।

प्रसंसा मेरे मन को आशा रूपी रस्सी में बान्धकर इस प्रकार रखती है, जैसे कि बन्दर को गले में डोरी बान्ध कर मनरमाने ढ़ँग से नचाया जाता है, और इसी प्रसंसा भाव के वशीभूत होकर मैं वैराग्य की बातें बड़े बड़े विद्वानों की भान्ति सभा स्थल की वेदी पर बैठकर करता हूं और सभापति कहलाता हूँ।

हे देव! मेरे इतने अवगुण होते हुए भी मैं आपका सेवक कहलाता हूँ। मानों मैने अपनी लज्जा घोलकर पी ली है।

हे देव! मुझे आपकी देव ज्योति और देव तेज प्राप्त हो सके, ताकिं मैं अपने सबसे बड़े शत्रु अंहकार से मोक्ष पा सकें।

आपका शिष्य

सत्य धर्म बोध उत्सव

हमेशा की तरह इस साल भी देव धर्म मिशन की ओर से सत्य धर्म बोध उत्सव का पावन और हितकर पर्व, सुविधा अनुसार निरधारित तिथियों से कुछ आगे रखा गया। यह उत्सव 2 सितम्बर से 4 सितम्बर 2011 तक सैक्टर 18 - डी, श्रीमति शुभवती ध र्मशाला में हर वर्ष की तरह मनाया गया। इस प्रोग्राम का पता "धर्म जीवन" हितस्त्रोत और बहुत से निमन्त्रण पत्रों द्वारा धर्म सम्बन्धियों को दिया गया। बहुत सारे धर्म सम्बन्धियों को टैलीफोन द्वारा संर्पक किया गया और इस अवसर पर पहुंच कर लाभ उठाने की प्रेरणा की जाती रही।

उत्सव से पहले हर इतवार श्रीमान बलदेव सिंह जी के ग्रह में सभा होती रही। उत्सव से पहले 2 - 3 दिन विशेष सभाएं करवाने का भी प्रयास किया, जिसमें धर्म सम्बन्धी अपनी योग्यतानुसार लाभ उठाते रहे। Madam Kiran M.A., B.Ed, व्यस्त होने के बावजूद हमेशा सभा में आकर लाभ उठाती रहती हैं। ब्यान करती रही हैं कि उन्हें अपनी ग़ल्तियां नज़र आती हैं और अपने गुस्से का पता लगता है। 2 सितम्बर को सभाओं का प्रोग्राम शुरू किया गया।

18 - डी धर्मशाला के मेहरबानों के सहयोग के लिए हम सदा ही उनके अभारी हैं। अपनी खराब सेहत के बावजूद, धर्मशाला के सैक्रटरी वा मैनेजर सभाओं में आते रहे। श्रीमती शकुन्तला जी भी काफी सभाओं में श्रद्धापूर्वक आकर शामिल होती रहीं।

साधन स्थान की सफाई वा सजावट पहले की तरह जगदीष जी ने बहुत मेहनत से की। श्रीमान मधुसूदन जी, श्रीमान जलधर जी और प्रदीप जी आदि ने इसमें सहायता की। गुरू महाराज की छवि और विकासालय के भूतपूर्व प्रिंसीपल साहिबान की फोटोज़ को सुन्दरता से रखा गया। यात्रियों के रहने का प्रयाप्त प्रबन्ध किया गया। परलोक वासी धर्म सम्बन्धियों के लिए भी साफ चादरें बिछाकर कुर्सियां रखी गई।

Toilets की सफाई आदि का प्रबन्ध प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़ ने अपनी निगरानी में करवाया यात्रियों को इससे बहुत सुविधा रही।

यात्रियों के खाने के लिए 2 जनों की सेवा ली गई। सफाई का ख़्याल रखते हुए disposable plates और बन्द पानी के गिलासों की पेटीयां लाई गई। यह सेवा श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने अपने ज़िम्मे ले ली थी। इससे भी सबको बहुत सुविधा रही।

गुरू महाराज की छवि द्वारा अर्चन करने के लिए सुन्दर हारों का प्रबन्ध किया गया, जो सदा जगदीष जी करते हैं। अर्चन का साधन श्री जगदीष जी और बलबहादुर जी करते रहे। सभाओं में श्री जगदीष जी भावपूर्ण होकर भजनों का गान करते रहे।

इस उत्सव में शमिल होने के लिए, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, राजस्थान, यू०पी०, बिहार और गुजरात से नीचे लिखे स्थानों से यात्री पहुंचे। देहरादून, दिल्ली, खतौली, लुधियाना, गोनियाना मण्डी, भटिंडा, महिमा सवाई, समराला, संगरूर, थराजवाला, कल्याण, मोहाली, चण्डीगढ़, दड़बा, पंचकूला, यमुनानगर, केसूपुरा, मल्लेका, गंगानगर, पदमपुर, गजसिंह पुर, बंगी (फाज़िलका) करनाल, सोलन, लांझनी, अम्बाला, मोदीपुरम, बन्नी, रनियां आदि के स्थानों से यात्री पंहुचे। लोकल परिवार भी उत्सव में शामिल होकर लाभ उठाते रहे।

सभाओं में अधिकारी जनों की अच्छी हाज़री थी। 60 - 65 जनों की हाज़री हो जाती थी।

सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान

बलबहादुर सिंह जी, और डा०) विनोद चन्द्र जी खेड़ा ने करवाई।

कुछ समाजिक पुस्तकों की स्टाल भी लगाई गई। हमेशा की तरह ओम प्रकाश जी वर्मा घण्टा बजाने की Duty भी करते रहे।

सभा स्थान पर गुरू महाराज की सुन्दर छवि सुशोभित थी। बहुत सुन्दर Motto लगाए गए थे। सुफेद चादरों की बिछाई से सभा स्थान पर बहुत पाक प्रभाव पड़ रहे थे।

<u>प्रवेश सभा :</u> सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

श्रीमान जगदीष जी ने "हमारे पू० सत्गुरू" नामक भजन गाना आरम्भ किया, गुरू महाराज का छवि द्वारा सुन्दर हार से अर्चन किया। देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या के बाद सभापति जी ने बहुत गहरे भावों से देव दरबार में इस उत्सव की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की "शरण तुमरी में आया हूँ, बचाओ तुम मेरे सत्गुरू " नामक भजन के बाद सभापति जी ने बाहर से आए यात्रियों का खड़े होकर स्वागत किया। फिर सभापति जी ने अपने ब्यान में बताया कि सब धर्मो वाले अपने धर्म को सच्चा समझते हैं परन्तु सब मिथ्या विश्वासों में फंसे हुए हैं। यदि सब धर्म सच्चे होते तो संसार में न मिथ्या होती न इन्सान का शत्रु इन्सान होता।

दुनियां में चारों तरफ मिथ्या पूजा, पाठ, जाप, कीर्तन, मिथ्या बली, भेंटें, मिथ्या संस्कारों, चिन्हों, रस्मों की रौ बहती है। एक जन ने बताया कि वह अपनी बहन के पास गया, जिसके 2 पुत्रियां थी वह लड़के के लिए विशेष कीर्तन करवाने का प्रबन्ध कराने गई थी, ऐसी मिथ्या में लाखों लोग फंसे हुए हैं। मेरे भाई के एकसीडैन्ट के बाद मेर पिता जी मेरे मना करने के बाद कई प्रकार के पाठ वा साधन करते रहे 35 - 40 हज़ार रू० लगा दिया, सब व्यर्थ गया। पाकिस्तान के कराची शहर में एक ही धर्म के लोगों ने कितने जनों को मारा, मस्जिदों में खून हुए। लीबिया में 50 हज़ार से अधिक लोग मारे गए। सन 1984 में बसों में आतंकवादी हिन्दुओं को उतार उतार कर मार देते थे। जब इन्द्रा गांधी का कत्ल हुआ तो बेकसूर सिक्खों को बड़ी बेरहमी से मारा वा जलाया गया।

यह सभा उनके लिए है, जो अपना दिल दिमाग़ खुला रखकर सुनेंगे।

धर्म क्या है? मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में जो सच्चा विज्ञान मूलक ज्ञान है जो नेचर के सत्य नियमों वा घटनाओं पर निर्भर है, वही सत्य धर्म का ज्ञान है।

नेचर के नियम क्या होते हैं? जिस विधि से कोई तबदीली आती है उस विधि का नाम नियम है।

परिवर्तन जड़ और शक्ति के कारण होता है। परिवर्तन दो प्रकार का है। एक विकासकारी वा उच्च या भला, दूसरा विनाश कारी, नीचे ले जाने वाला और खराब। नेचर के चारों जगत परिवर्तन द्वारा पैदा हुए हैं। नेचर के नियम अटल हैं। इनको कोई बदल नहीं सकता।

सोलन आश्रम में गुरू महारज खड़े थे। एक राजा ने उन पर 4 - 5 गोलियां चलाई, परन्तु उन्हें नहीं लगी, वह इसलिए कि निशाना चूकने का नियम पूरा हो गया। नियमों के विरुद्ध जो कुछ बताया जाता है, वह सब मिथ्या है।

"जदों करम सवलड़े आन हुंदे, खेत जम दे भुजियां दानियां दे।"

यह बात गल्त है। किसी पाठ वा आरती से मां के पेट में लड़की लड़के में नहीं बदल सकती।

सच्चे धर्म के अन्दर नैतिक वातावरण और आत्मिक वातावरण पैदा होना जरूरी है। एक फौजी को उसकी सेवाओं के लिए मुरब्बे अलाट कर दिए, परन्तु उन्हें मिलने में बहुत समय लग गया, वह फौजी

डी०सी० साहिब के पास पहुंचा, उन्होंने कहा कि जाकर पटवारी की कुछ पूजा कर दो, काम हो जाएगा।

देवात्मा अनोखा धर्म लाए हैं, जिसमें उनके देव प्रभावों का अनोखा वातावरण है, जो निराला काम करता हैं

सत्य धर्म वह होता है, जो मनुष्य को अपना आप दिखाए, अपने दोषों, अपराधों और हानियों को दिखाए, सत्य धर्म वह धर्म है जिसमें विकास पाने, और उच्च तबदीली लाने की समर्थ्य हो।

मेरा जीवन गुरु के प्रभावों की जीती जागती तस्वीर है। श्रीमान धर्म बल जी को पिता ने रिश्वत न लेने के कारण कमरे में बन्द कर दिया। पटवारी होकर उन्होंने किसी प्रकार भी रिश्वत लेना स्वीकार नहीं किया। जब पिता को प्रभाव मिले तो बेटे के पावों में पगड़ी रखकर क्षमा प्रार्थना की।

सात्विक भाव मनुष्य को महान बनाते हैं, परन्तु उनमें आत्मा के विषय में रोशनी नहीं होती।

दो प्रकार के भावों से धर्म आता है। एक परोपकार करने वाले भाव, दूसरा परम पू० भगवान देवात्मा के साथ आत्मिक सम्बन्ध जोड़ने वाले भाव। इन भावों के बिना कई पक्षों में योग्य होकर भी आत्मिक पक्ष में मनुष्य अन्धेरे में रहता है।

इस दर पर आकर परोपकार, श्रद्धा कृतज्ञता वा हमदर्दी आदि भावों की आंखें मिलती हैं।

सत्य और हित के अनुरागी देवात्मा के दर पर आकर हमने लाभ उठाना है, उसके लिए कुछ नियम पूरे करने हैं।

उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कुछ ब्यान किया, बहुत प्रभावशाली वातावरण बना। श्रीमान जी ने कुछ duties और हिदायतें बताई और अगले दिन का प्रोग्राम बताया। चार बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई।

<u>3.9.2011 – सुबह 8.30 बजे :</u> सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी, "अद्वितीय है रूप तुम्हारा" नामक भजन के बाद छवि द्वारा गुरू महाराज का सुन्दर हार से अर्चन किया गया। देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद गुरू महाराज के दरबार में सभापति जी ने भावपूर्ण होकर सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने बताया विकास क्रम क्रिशमे करता है। नये किस्म के फल, फूल, पशु और उन्नत दिमाग वा दिलों का विकास हुआ है। सारा मनुष्य जगत, यहां तक कि पादरी, पोप, गुरू, सन्त, महन्त सब अन्धकार ग्रस्त हैं। आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान नहीं, अपनी परिचालक शक्तियों का ज्ञान नहीं। इसलिए जो कुछ हम हैं, हम नही जानते। हम मिथ्या और पाप ग्रस्त हैं। हम देवात्मा की महिमा गाने के योग्य नहीं। मनुष्य जीवन के मुख्य कोष है पेट कोष, मान्सिक कोष और आत्मिक कोष।

पाप बोध क्या होता है? आत्म बोध क्या होता है?

अधिक खाना शारीरिक अबोधता है, शिक्षा न पाना मान्सिक अबोधता है। आत्मिक थोड़ा सा बोध पैदा होने से श्रीमान रूपचन्द जी को रिश्वत लेना मौत समान अनुभव होता था। यह आत्मिक कोष है। धर्मवान जन आत्मिक अबोधी बच्चों की अबोधता से दुखी होता है। जब तक साक्षात तजरबा नही होता, तब तक बोध की दुनियां नहीं खुलती। देव प्रभावों का वातावरण हमारे लिए जान और प्राण की चीज है। हमारे दुर्भाग्य हैं कि हमारा विकासालय बन्द हो गया। विद्वान होकर भी मनुष्य विनाशकारी सम्बन्धियों को नहीं देख सकता। देव प्रभावों का मण्डल आत्मिक फरिज है। माता जी विद्यावती जी में यह बोध था, वह आख़री उमर तक सभाओं में आती रही। विनोद जी भी जहां तक हो सके सभा नहीं छोड़ते। हम चूहे हैं, जैसे एक चूहे को पिंजरे

में देखकर भी दूसरे चूहे पिंजरे में रोटी और गुड़ खाने का लालच नहीं छोड़ते और मौत को प्राप्त होते हैं।

कल्याण के एक सत्संग में आकर एक ग्रैजूएट टीचर नौजवान ने अपने अध्यापकों के चरणों में प्रणाम किया। पत्नी से भी पावों में गिरकर अपने व्यवहारों के लिए क्षमा मांगी। फिर पिता के उपकारों का सुन्दर शब्दों में ब्यान किया। "जो सिर सांई न निवें, सो सिर कप उतार" जो सिर अपने उपकारियों के आगे नहीं झुकता, वह सिर उतारने के योग्य है। एक जन ने अनुभव किया है कि मेरी शराब और जूए की आदत ने मेरे पिता की जान ले ली। मैं पिता का कातिल हूं। इन्हीं प्रभावों ने एक दर्जी को उसकी बेईमानी दिखाई। देव समाज के अंग्रेजी अख़बार को पढ़कर एक दामाद ने अपने ससुर के पावों में पगड़ी रख दी। एक मिस्तरी को परोपकार में लगा दिया। देव प्रभावों को पाकर ही देव प्रभावों की कीमत नज़र आती है। पापों का परिशोध करके, अंह के बोध से ही आत्म बोध पैदा होता है। आत्मिक जीवन और मौत का बोध अवश्यक है। यदि देव प्रभावों तक ठोस रसाई हो जावे तो मनुष्य का बड़ा सौभाग्य है। यह सभा बड़ी सरल वा प्रभावदायक थी।

कुछ देर विश्राम के बाद दूसरी सभा परम पू० भगवान देवात्मा के पवित्र आदेशों की सभा की गई।

<u>दूसरी सभा: –</u>

सभापति: – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

सभापति जी ने बताया कि योग्य सर्जन जो दिल के मरीज़ थे, परन्तु अपनी शक्ति से बढ़कर अप्रेशन करते करते अपनी जान गंवा बैठे। यह इसलिए हुआ कि वह डाक्टरी की विद्या तो रखते थे, परन्तु अपने भावों का ज्ञान, जो सबसे कीमती है, नहीं रखते थे। अपना ज्ञान सर्वोत्म ज्ञान है।

आत्मा क्या है? जो जीवनी शक्ति भौतिक जगत में विकसित होकर, उद्भिद ओर पशु जगत में भिन्न आकारों में प्रकाशित हुई है, वही जीवनी शक्ति मनुष्य में पहुंचकर आत्मा कहलाती है।

सारा विश्व जड़ और शक्ति से बना है। निरजीव शक्तियां ही परिवर्तित होकर जीवित जगत बना है। जैसे किसी भी जगत में न अकेली शक्ति है और न ही अकेला पदार्थ है। इसलिए शरीर और आत्मा का भी अकाट्य सम्बन्ध है। शरीर स्थूल हो या सूक्ष्म, शरीर के बिना आत्मा नहीं रह सकता।

हमारा अस्तित्व विश्व का अंश है और चारों जगतों से जुड़ा हुआ है। हमारा मुख्य लक्ष्य नीच भावों से निजात और उच्च भावों का विकास करना है। आदेशों के पाठ से यह सब तत्व समझाए गए। जहां तक पद, प्रभुत्व, दान, मान बड़ाई उपरोक्त लक्ष्य में सहायक होते हैं, तब तक ही वह रखने की चीज़ हैं। मनुष्य को निम्नलिखित नीच गतियों और उनके विकारों से मुक्ति पाने की अवश्यकता है।

नीच घृणा से दुख की उत्पत्ति की ज़रूरत है। जो देव प्रभावों द्वारा ही पैदा होती है। नीच गति से अन्धकार, कठोरता, दुबर्लता और जीवनी शक्ति का ह्रास होता है, उसके विवेक और सच्ची तड़प की ज़रूरत है। यह विवेक वा तड़प सरदार हरनाम सिंह जी के भीतर अपने नौकर से दुर्व्यवहार के प्रति पैदा हुई। उन्होंने दीनता पूर्वक उनसे क्षमा मांगी। इस घटना को विस्तार से बताया।

परम पू० भगवान देवात्मा ही एक मात्र उपास्य हैं, वह हमारे आदर्श हैं, उनके साथ विधि पूर्वक सम्बन्ध स्थापन कर उनकी पूजा करके हम उनके देव प्रभावों को लाभ कर सकते हैं। जो ऐसा करने के योग्य

हो जाता है उसे कोटि कोटि प्रणाम है। बहुत सुन्दर ढंग से आदेशों की व्याख्या की और फिर चार बार जय ध्वनि करके सभा की समाप्ति की। शाम की सभा की सूचना दी।

5 बजे शाम : सभापति श्रीमान डा० विनोद जी खेड़ा

विषय :- भगवान देवात्मा के अद्वितीय प्रभावों का कारज। पहले जगदीष जी ने, "तुम हो सरताज सकल जग के निराले भगवन" नामक भजन गाया। फिर सभापति जी ने फरमाया कि भगवान देवात्मा के अर्थ हैं ऐसे देव कि जो नई प्रकार की शक्तियां लेकर आए हैं। सत्य वा शुभ अनुराग की शक्तियां।

हम सब मनुष्य सुख अनुरागों की शक्तियों से परिचालित होते हैं, भगवान देवात्मा सत्य और शुभ अनुरागों से परिचालित होते हैं। इस पक्ष में सारे मानव जगत से बिल्कुल अलग हैं।

पू० भगवान सचाई और भलाई पर फना होने के लिए बेबस हैं। नेचर का overall लक्ष्य है विकास की ओर जाना। नेचर के भीतर INERTIA का नियम काम करता है। जहां कोई अस्तित्व पड़ा है, वह पड़ा रहना चाहता है। उस हालत में परिवर्तन लाने के लिए फोरस की अवश्यकता है तभी कोई परितर्वन सम्भव है। जब हम में परिवर्तन आता है, तो वह हमारे चारों ओर की शक्तियों के प्रभावों से आता है।

अन्ना हज़ारे के अन्दोलन ने बड़ी ज़ोरदार शक्ति generate की है। उसका विशाल प्रभाव पड़ा है। सारा देश ही उठ खड़ा हुआ। यदि यह अन्दोलन आज से 50 वर्ष पहले होता, तो यह कामयाब न होता।

1972 में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने आगरा में डा० दीक्षित जी के घर में प्रभावों की विशाल दुनियां का चित्र चित्रित किया था, उसका असर आज तक भी मुझ पर है। टैलीविज़िन के प्रभाव सारी समाज पर पड़ रहे हैं।

प्रभाव एक ऐसी शक्ति है कि जो किसी वजूद, मनुष्य या घटना क्रम को तबदील करती है उन्होंने अपने एक विद्यार्थी की घटना बताई, वह सारी रात अपने boy friend से बातें करती थी, उसका फोन दो तीन बार ज़बत किया, परन्तु वह और फोन ले आती। उसे माता पिता सम्बन्धी प्रोग्राम में शामिल होने का मौका मिल गया, उसने रो रोकर 3-4 सफे का दुख और अफसोस का पत्र लिखकर दिया, उसके बाद वह खूब मेहनत करने लग गई।

मेरी दादी जी के पिता जी पटवारी थे, गुरू महाराज के प्रभावों से उन्होंने रिश्वत लेनी छोड़ दी दिवाली पर मिठाई की जगह गुड़ लेकर आए। मेरे श्रद्धेय दादा जी शराब, मास खाने वाले थे और वह जंगली जीवन बसर कर रहे थे, उनका ही जीवन नहीं बदला, उन्होंने डोगरा परिवार को बदल दिया।

इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने ब्यान करना शुरू किया।

श्रीमान जी ने बताया कि खेड़ा साहिब का जीवन संग्राम का जीवन है। उनको नानका और दादका side से बहुत सुन्दर जीनज़ मिले हैं,

मेरे ऊपर गुरू के प्रभाव पड़े, उनके प्रभावों के अद्वितीय कारज से मेरी कामवासना सम्बन्धी नीचता मुझे तड़पाने लगी, धीरे धीरे उनके दरबार में रो रोकर प्रार्थनाएं की, इन प्रभावों ने मुझे बचा लिया। अब खूबसूरत लड़कियों को देखकर कभी बुरा ख़्याल नहीं आता, इसके लिए पू० भगवान को जितना धन्यवाद दूं, वह थोड़ा है।

फिर यह नज़र आया कि मैं सरकार से तनख़्वाह लेकर, अपना समय अपने मनोरजंन में गंवा देता हूं। कर्तव्य परायणता इन असरों ने सिखाई।

डा० मन्सा सिंह जी को 13 धर्मों में जाकर भी अपना धन अनुराग नज़र नहीं आया। 20 साल पहले

के मारे हुए रू० वापिस किए। मुझे कई वर्ष पहले अपनी पत्नी का रूप नज़र आया। उनके गुण नज़र आए। उनके आगे अपने नम्बर एक दम गिर गए। उससे उनके प्रति सम्मान पैदा हो गया, फिर उन्हें कभी तू कहकर नहीं बुलाया। गुरू के प्रभाव राक्षसी मनुष्यों की बदल कर क्या से क्या बना देते हैं।

एक बार शराब पीकर इतनी बदतमीज़ी की कि मेरा कतल भी हो सकता था। उसी राक्षस को देवात्मा के देव प्रभावों ने श्रीमान जी बना दिया, इज्ज़त बख़श दी गुरू के आगे उन्होंने बार बार सिर झुकाया।

मन्त्री जी ने गुरू महाराज के चरणों में बार बार सिर झुकाया और अगले दिन का प्रोग्राम बताया और चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई।

4.9.11, पहली सभा 8.30 बजे सुबह

सभापति :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय :- भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन लाने का अद्वितीय कारज।

सबसे पहले श्रीमान जगदीष जी ने "हे सत्य शिव सुन्दर ब्रत धारी" नामक भजन का बहुत श्रद्धापूर्वक गान किया। फिर गुरू महाराज का छवि के द्वारा अर्चन किया। देव स्तोत्र का समूह गान और व्याख्या की और सभा की सफलता के लिए गुरू के दरबार में गहरे भावों से सहाय प्रार्थना की। दूसरा भजन "करो कृपा मेरे सत्गुरू, बचालो नीच जीवन से " जगदीष जी ने गाया।

फिर सभापति जी ने अपने ब्यान में बताया कि नेचर का नियम है, जितना उच्च जीवन बढ़ता है, उतना ही नीच जीवन कटता है। जितना नीच जीवन बढ़ता है, उच्च जीवन कटता है। जो जीवन नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं की तृप्ति का जीवन होता है, उसको ही नीच जीवन कहा जाता है।

जो जीवन उच्च भावों वा सात्विक भावों की तृप्ति का होता है, उसको उच्च जीवन कहते हैं।

मानवता के भीतर सब से प्रधान नीच अनुराग "मैं" का प्यार है। इसका मनुष्य जीवन पर सबसे बढ़कर अधिकार है। हम सब भी कम या अधिक अपने आपको प्यार करते हैं। इसमें सब नीच अनुराग आ जाते हैं

अपनी इच्छा, अपनी रूचि, अपने नीच सुख, अपनी सोच को मुख्य रखने का जीवन, सब नीच जीवन होता है। प्रवीन कुमार का स्वार्थी जीवन किस कदर हानिकारक बना।

My need is greater than everyone नीच जीवन है। thy need is greater than mine, महा उच्च जीवन है विशाल जीवन है। डा० श्री राम जी का जीवन स्वार्थ का जीवन था। कोकीन बेचना, मां को पानी का टीका लगाना, भाई से भेजे हुए 200 रू० में से भी 100 रू० स्वयं रख लेना स्वार्थ पूर्ण जीवन था।

स्वार्थी झूठा, कपटी, धोखेबाज, चोर किसी का सगा नहीं होता। वह किसी को नहीं छोड़ता। धर्म पत्नी कई बार आत्म हत्या तक करने को तैय्यार हो जाती थी, बहू बेटों से झगड़ा। बेटा पोस्टमास्टर गुस्ताख बेटा बन गया था। शराब, मास न खाकर भी गन्दे शब्दों से घर नर्क बना हुआ था। अमरीका वा पैरिस वा लंडन हो, जहां "मैं" का जीवन होता है, स्वार्थ का जीवन होता है। वहां रोग, तड़पन, निराशा, अन्मेल और लड़ाई फसाद वा टकराहट की ही फसल काटनी पड़ती हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा की लासानी रोशनी और तेज के प्रभावों से हमें अपनी योग्यातानुसार अपने नीच जीवन की, स्वार्थ की, घमंड वा घृणा की होश मिलती है। अपनी होश, अपनी नीचता वा स्वार्थ दिखाई देता है। डा० साहिब को रोशनी में अपनी

नीचता, नीच गतियां, ग़ल्त बोल, गल्त व्यवहार वा हकूमत आदि घृणित और खराब दिखाई देने लग गया।

"मैं" का अन्धा न क्षमा मांग सकता है, न किसी को क्षमा कर सकता है। देव प्रभावों के मिलने से क्षमा मांगना और न क्षमा करना कठिन महसूस होता है।

डा० साहिब ने अपनी सिर की टोपी उतार कर अपनी पीड़ित पत्नी वा बहू के पैरों में रख दी उसी दिन से नीच जीवन कम होने लगा और चारों पक्षों में बरकतें मिलने लग गई।

डाक्टर साहिब को रोशनी मिली तो बेटे को भी रोशनी मिलने लगी। माता को प्रणाम करने लगे। चांदनी चौक के भरे बाज़ार में पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। सारे संसार में शुकरगुज़ारी का आकाल पड़ा हुआ है। हम सब नाशुकरे हैं।

मेरे बेटे को हस्पताल में डाक्टरों ने बचा लिया। उनकी फीस से अधिक पैसे Offer किए, परन्तु उसके बाद ऐसा नहीं कर सका। मंडल का प्रभाव था। मैंने अपनी एक अध्यापिका से कहा कि 25 हज़ार रू० तरख़्वाह लेती हो, कभी माता पिता को कोई भेंट दी, तो उनका उत्तर था कि माता पिता से तो लिया जाता है, दिया नहीं जाता, जो सेवा लेता ही लेता है, देता कुछ नहीं पू० भगवान फरमाते हैं कि वह खुदगर्ज, कमीना वा पापी है।

शराब, मास का जीवन भी नीच जीवन है, परन्तु स्वार्थ का जीवन महा नीच जीवन है। एक 2 बहन अपनी दूसरी बहन से ईर्षा करती हैं। भाई के घर में दूध है तो ईर्षा परायण यह कामना करता है कि भैंस मर जाए, तब शान्ति मिले।

हम सब पाप, स्वार्थ से भरे हुए हैं, परन्तु जिसको अपना काला रूप नज़र आता है, वह अपना मुंह काला करके बैठने के लिए मजबूर हो जाता है। जो बहन वा अपने भाई से ईर्षा करता है, वह अन्दर से काला ही है।

भगवान की रोशनी में ही अपना कालापन नज़र आता है। मैं शराबी, कबाबी, नीच, सड़ांद से भरा हुआ जीवन रखता था। स्वार्थी, कामी, नशई, निकम्मा, कामचोर था। चाहता था कि घर में मेरे भाई मुझे बाई जी कह कर बुलाएं। मेरे जीवन में बेहतरी आने लगी, मेरी नीचता घटने भी लगी। मेरी उक्त मांग ख़तम हो गई। मेरे जीवन में बेहतरी आने लगी, मुझे खुद-ब-खुद ही बहन भाई मुझे बाई जी कहने लग गए।

भगवान देवात्मा हमारा अंहकारी, अपमान करने वाला, स्वार्थी नीच जीवन घटा देते हैं। नाशुकरे बेटों को सेवा करने, सम्मान करने लगा देते हैं। माता-पिता धन्य धन्य हो जाते हैं।

जिस मां को पोस्टमास्टर बेटा 'रांड' कहकर बुलाता था। पत्थर मार कर सिर फोड़ दूंगा कहता था, वह बेटा न केवल मां को सन्मान देने लगा, बल्कि शुकराने से भरकर मां के गन्दे कपड़े धोए और मां से यह सर्टीफिकेट लिया कि " बेटा मदन तुमने मेरे पेट पड़े का बदला दे दिया"। सत्गुरू इसी धरती पर स्वर्ग लाते हैं।

श्रीमान नौध सिंह जी का अपना कथन है, मैं अपनी बहन के पास फाज़िलका रहता था। मेरा जीवन इतना नीच था कि बहन भी मेरे ऊपर कोई विश्वास नहीं करती थी, अपनी बेटी को मेरे साथ कभी नहीं भेजती थी।

भगवान देवात्मा के प्रभावों से वही श्रीमान जी पवित्र आत्मा बन गए, शराब, मांस, हुक्का आदि चले गए। बेईमानी चली गई। स्वार्थ वा अंहकार का जीवन चला गया। गुरू महाराज गीदड़ों को खरबूजों के सरंक्षक बना देते हैं। यह कार्य श्रद्धा की आंखों से

दिखाई देता है।

प्रेम जी बन्नी के जीवन की घटना सुनाई, अपने माता पिता से, बड़े मामा जी से क्षमा मांगी। चाचा जी से क्षमा भी मांगी और उनको 30,000 रु० की रक्म वापिस की। घर स्वर्ग बन गया। भगवान देवात्मा का कारज अनोखा है।

डा० मनसा सिंह जी का परिवर्तन पेश किया। परम पू० भगवान की देव ज्योति और देव तेज की अज़मत बताना हमारी पहुंच से बाहर है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को अधिकारी मनुष्यों के शुभ का दिवाना बना दिया। इस अनोखे कारज में उन्होंने अपना आप फ़ना कर दिया।

सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा के कारज का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया, श्रोतागण सुनकर धन्य धन्य हो रहे थे। गुरू के दरबार में हृदय झुक रहे थे।

दूसरी सभा 10.45 सुबह

सभापति :- श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय :- जन और धन की अपील और हमारी ज़िम्मेवारी की सभा में सभापति जी ने बताया कि फासफोरस पानी से बाहर निकलने से आग पकड़ लेती है। हमारा भला इन्हीं देव प्रभाव दायक मण्डल में सम्भव है। हम पर तीन पुश्तों से बरकतों की वर्षा हो रही है। इन्हीं प्रभावों में ही हमारी ख़ैर है, यह सबक याद नहीं रहता। A thing of beauty is joy forever. डा० सिरी राम जी फासफोरस वाली प्रकृति रखते थे, मनुष्य प्रकृति भी बुरे प्रभावों में आग की लपटों में घिर जाती है। श्रीमान जगदीष जी का परिवर्तन झुकाता है। श्रीमान हरिन्द्र जी के परिवर्तन से पिता जी बहुत खुश हुए थे। श्रीमान मेहर सिंह जी को जब माता पिता को प्रणाम करने के लिए कहा गया तो उन्होंने कहा, "इतने काहले (जल्दी) न चलो।" जब कोटकपूरे में माता पिता को सम्बन्ध में सभा हुई तो माता पिता के गले में हार डालकर प्रणाम किया और पिता जो परोपकारी थे कहने लगे, आपने तो हमारे घर में स्वर्ग पैदा कर दिया है। जो मनुष्य अंहकारी होता है, वह पागल कुत्ते की तरह होता है, अन्धा वा उल्टा दृष्टा होता है। अंहकारी क्षमा मांग भी नहीं सकता है।

मैंने बड़ी मुश्किल से ज़मीन बनाई, फसल पक गई, परन्तु अभी सम्भालनी थी कि श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी की मौत का पता लगा गया, वहीं फसल छोड़कर मैं चला गया क्योंकि वहां जाना फसल से अधिक महत्वपूर्ण था। फसल का घाटा भी पूरा हो गया।

भाव प्रकाश

श्रीमान मेहर सिंह जी:- अब जिन्दगी में कोई तमन्ना नहीं। केवल देव प्रभाव पाने की तमन्ना है। यदि किसी की सेवा कर दो, तो दुश्मनी ख़त्म हो जाती है। सब समस्याओं का समाधान देवात्मा के प्रभावों वा उनकी शिक्षा में है। सभाओं में शामिल होना विकास का नियम है। मनुष्य उतना ही खुश हो सकता है, जितना वह दूसरों को खुश कर सकता है। पुलीस वाले वर्षा में भी हमारी सेवा करते हैं। मेरे माता पिता, भाई उपकारी थे, वह चले गए। अब उपकारी धर्म सम्बन्धियों और श्रीमान जी की सेवा करने के भाव हैं। मैं पापी, घटीया, नीच आदमी गुरू की कृपा से खुश हूं। पर मेरी पत्नी दुखी हैं, मैं उनका ऋण उतार नहीं सकता, यह मेरा दोष है। मैं उनको खुश और तन्दरूस्त करके अपना भला कर सकूं।

श्रीमती कमलेश जी :- जब भी सभाओं में बैठती हूं, तो नये तत्व सामने आते हैं। अपने नीच अनुराग और नीच घृणाएं नज़र आई। हैं। हम बुरके डालकर फिर रहे हैं, देव प्रभाव हमारे बुरके उतारते हैं। यहां आकर कुछ अपने आपको जानने का मौका मिलता है। मैं तो गुरू महाराज के आगे बैठने के योग्य

भी नहीं हूं। पति की मौत के बाद मैं तो बदहवास सी हो गई थी, गुरू का दर ही बचाता है। मैं गुरू मिशन के लिए कुछ करना चाहती हूं, परन्तु अन्दर की घिनौनी शक्तियां पेश नहीं जाने देती। उच्च भावों में ही जीवन है। काश! मेरी करनी और कथनी एक हो जाएं। महोत्सव पर पहुंचने का वायदा किया।

श्री गोपाल कृष्ण जी :- यहां आकर नई उमंगे जागी हैं। मिथ्या भी कुछ गई हैं। सम्बन्धों में भी कुछ सुधार हुआ है।

"दुखिया पड़ा भटकता था, अन्धकार भीतर,
तुमने निकाला वहां से ज्योति को अपनी देकर"

अब वह वलवले नहीं रहे, जो पहले थे। डा० मनसा सिंह जी हमेशा हमदर्दी करके सहायता करते हैं। मेरा पुस्तकों वा इस दर के प्रति आकर्षण घटा है। अपना आप कोढ़ी वा गन्दगी का कीट नज़र आता रहा है महोत्सव पर परिवार सहित पहुंचूंगा। इस दर के बिना कोई ठिकाना नही।

श्रीमान नरेन्द्र जी धीमानः- पारस पत्थर सुना है, देखा नहीं यह दर पारस है जितना इससे जुड़ा हूँ, भला हुआ है। अपनी समर्थ्य अनुसार सब सत्संग attend करता हूं। महोत्सव पर अवश्य आऊंगा।

श्रीमान रजिन्द्र कुमार जी, (देहरादून) बड़ी मुश्किल से यहां आया हूं, यहां भी नौकरी की ओर ही ध्यान जाता था। मेरी आर्थिक हालत बहुत सुधर रही है। अब लोग मुझ पर विश्वास करते हैं, खाली चैक हस्ताक्षर करके दे देते हैं। औरों को इस दर से जोड़ने की कोशिश करूंगा। महोत्सव पर परिवार सहित आऊंगा।

श्रीमान डाक्टर मनसा सिंह जीः- दो नई बातें समझ आई हैं। मैं अपने आपको ईमानदार समझता था। परमात्मा को पाना चाहता था। मैं टैक्स चोर था, मैं गुरू घाती, मित्रघाती, मैं मासी घाती था। मैं दोस्त के Sample मार गया। 'मैं' का दास हूं। एक मरीज़ के पैसे 20 साल बाद वापिस किए। जैसे धन अनुराग मुझे सताता था, वैसे ही अंह अनुराग मुझे सताता है। यह बहुत घातक है। मुझ में कृतज्ञता का भाव बहुत कम है। मुझे प्रभाव न मिले तो मैं निराश हो जाता हूं। मैं साधन करता रहूंगा, इसी दर पर मेरी ख़ैर है।

डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लोंः- पिता जी मेरे जन्म से पहले समाज में आ गए थे। मैंने बहुत सभाएं attend की हैं, इस सत्संग से विशेष लाभ हुआ है। उपकारी बहन जी का धन्यवाद करती हूं, वह मुझे हमेशा guide करती रहती हैं। मैं उनका धन्यवाद करती हूं। मै समझती हूं कि मेरे अन्दर Gratitude है। मेरा कुछ अहंकार दूर हो रहा है। अगर मेरे अन्दर शुक्रगुज़ारी होती तो मिशन के लिए कुछ करती। मैं पुस्तकें पढ़कर discuss किया करूंगी। मैं अपने staff के साथ ऊंचा बोल जाती हूं। बेशक फिर मैं महसूस कर लेती हूं। आगे से इसमें सुधार करूंगी। मैं मरी हुई आत्मा हूं, हमारे बच्चे इस दर से नहीं जुड़ रहे, मैं इस बात से बहुत upset हो जाती हूं। (दुखी होकर रो रोकर ब्यान किया) गलोरी और रूबी दोनों मुझे बहुत प्यार करते हैं, मुझे इनका बहुत सहारा है। इनके उपकार नज़र आ रहे हैं। मैं यहां होने की सूरत में ईतवार की सभा अवश्य attend करूंगी।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना :- सच्चा धर्म क्या है? यह ज्ञान बढ़ा है। गुरू के बल से मुर्दा रूह में जान आ जाती है। गुरू के साहित्य से लाभ उठाना है। मैं फूला नहीं समाता कि मेरा इतना भला हुआ है। मिथ्या दूर हुई है। मेरा इच्छा है कि गुरू की शिक्षा को फैलाने में सहायक हो सकूं। उपकारियों के कुछ उपकार नज़र आते हैं, कृतज्ञता मुझमें नहीं है। सम्बन्धों में और सुधार करने की अवश्यकता है। मुझे अपने बच्चों से बहुत अच्छे व्यवहार मिल रहे हैं।

श्रीमान वीरपाल (समराला) गुरू महाराज की कृपा वा श्रीमन जी के संग्राम के कारण मैं सभाओं में आ सकती हूं। यहां आकर भला होता है तो ऐसा लगता है कि यहां ही रह जाएं। सभाओं में बैठकर पता लगता है कि मैं अपने बहुत से नम्बर जोड़ती रहती हूं। पर हूं मैं जीरो। इस सत्संग रूपी फरिज की बहुत ज़रूरत है। मैं कोशिश करूंगी कि और सत्संग attend करूं।

मेरी बेटी साथ है, वह भाव प्रकाश करना नहीं जानती, परन्तु कहने लगी कि यहां आकर डैडी के ढेरों उपकार नज़र आए हैं। यदि वह कभी गुस्से से बोले तो फट सौरी कह देती है, परन्तु अब कहती है कि मुस्सा नही करूंगी। श्रीमान जी का धन्यवाद करती हूं जो हमारी आत्मिक और संसारिक तौर पर रक्षा करते हैं।

कल ही एक शरारती बच्चे को कलास से बाहर खड़ा किया वह दूसरे बच्चों को पढ़ने नही देता था। श्रीमान बलबहादुर जी की सभा सुनकर महसूस हुआ कि कलास से बाहर निकाल कर मैंने उसका क्या भला किया। अब मैं ऐसी सजा नहीं दूंगी और बच्चों को प्यार के साथ हैंडल करूंगी।

<u>श्रीमान तेज राम जी (गुजरात):-</u> चण्डीगढ़ में सतसंग पर आया, देवसमाज प्रबन्ध और विशेष कर श्रीमान बलदेव सिंह जी का बहुत आभारी हूं।

मैं दूर से आता हूं परन्तु उस सब कष्ट के मुकाबले लाभ अधिक हुआ। यात्रियों के खाने पीने और ठहरने के लिए प्रबन्ध कर्ताओं का बहुत धन्यवाद। प्रवेश सभा के लेकर सारे सतसंग में देव प्रभावों का अच्छा मण्डल बना। बड़ी बारीकी से देवात्मा के देव प्रभावों के कार्य बताने का यत्न किया गया। एक एक सभा में सभापति जी खुद हिल जाते और श्रोताओं को हिला देते। बड़ा पाक मण्डल बनता था। मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में गुरू महाराज के आदेशों के पाठ की सभा में और बाकी सब सभाओ में स्पष्ट कर दिया कि अपने कल्याण के लिए हम देवात्मा के देव प्रभावों के मोहताज हैं। देव प्रभाव हमारा भला करते हैं यदि हम उन की निकटता लाभ करें अपने आप को देखने और पहचानने तथा उसका कल्याण साधन करने के लिए देव प्रभाव ही एक मात्र साधन हो सकते हैं, और हैं।

इस सतसंग में शामिल होकर दिल बहुत धन्य धन्य हुआ। साथ अपने पोतरे अर्शादी और उसके एक दोस्त को भी लाया हूं था, पहले भी लाया था, आशा है कि उन लड़कों को भी लाभ हुआ होगा और वह अपने दिल की अच्छी हालत के साथ वापस जाएंगे।

अन्त में गुरू महाराज को धन्यवाद देता हूं कि जिन्हों ने अपने देव संग्राम से देव समाज की स्थापना और संगत के ऐसे मौके रखे। इसके साथ ही प्रबन्धकों का बहुत धन्यवाद जो प्रबन्ध के लिए इतनी भाग दौड़ करते हैं, पत्र लिखते है, फोन करते हैं और स्वयं जाकर साथी सेवकों को प्रेरणा करते हैं परन्तु साथी सेवकों की उदासीनता पर अफसोस होता है। कुछ तो प्रेरणा के बावजूद आते ही नहीं और जो कुछ आते भी हैं उन में कुछ पूरी सभाएँ सुनने से पहले चले जाते हैं। इस समय मैं तो केवल इतनी कामना कर सकता हूं कि उनका भला हो। देवसंगत की ओर उन का ध्यान जाए और लाभ उठा सकें।

मेरी ऐसी कामना है कि मैं यथा समर्थ्य संगत से लाभ उठा सकूँ और मेरे परिवार के लोग संगत से जुड़ सकें।

धन्यवाद सहित
तुच्छ तेज राम

शुभ संग्राम

9 सितम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से रवाना होकर 12 बजे के लगभग पटियाला पंहुचे। वहां श्रीमती रक्षा जी और मंगला जी को मिले। उनके दोनों प्यारे भाई परलोक चले गए, उनका अफसोस किया। कुछ समाज की किताबें भी उन्हें दी। वहां घण्टा, सवा घण्टा ठहरकर श्रीमान जी संगरूर पहुंचे, श्रीमान सीता राम जी वा उनके परिवार को मिले।

कल्याण मल्लेकी :- शाम 5 बजे श्रीमान जी यहां पहुंच कर स्थानी सेवकों के घरों में मिले। श्रीमान भाग सिंह जी की सेहत का पता लगाया। रात को 8 बजे की सभा का पता दिया। श्रीमान बलबहाबुर सिंह जी भी पहुंच कर साथ शामिल हो गए। यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। गुरू महाराज की पैदा कर्ता संगत की महिमा ब्यान की, जिसकी हर इन्सान को बेहद अवश्यकता है। इस सभा में दो तीन नये जन भी आकर शामिल हुए।

10 सितम्बर सुबह फिर एक सभा की गई, इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य जितना उच्च संगत के निकट होता जाता है, उतना ही वह उच्च बरकतों का भागी बनता है इसके उदाहरण पेश किए गए। हाजरीन काफी प्रभावित हुए और इस दर से पाई बरकतों को अनुभव किया। उसके बाद कुछ स्थानी विषयों पर हितकर बात चीत हुई।

थराजवाला:- शाम को श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी थराजवाला पहुंचे। 5.30 बजे सभा की गई। 20 के लगभग स्त्री पुरुष इसमें शामिल हुए। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने बताया कि मिथ्या वा कल्पना मूलक विश्वासों वा पाप जीवन की समझ भी परम पू० भगवान के दर के बिना समझ नहीं आती। मिथ्या और पाप में ठोकरें खाते ही ज़िन्दगी बर्बाद हो जाती है। इस बर्बादी की बहुत सी घटनाएं बताई गई। भगवान देवात्मा के दर पर आकर भी मनुष्य पाप और मिथ्या में गर्क हो जाते हैं। गुरू की ज्योति वा शक्ति पाने के लिए हाजरीन से ज़ोरदार प्रेरणा की। अगले दिन सवेरे सभा रखने का फैसला किया।

11.9.11, सुबह 9 बजे सभा की गई यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। उन्होंने परम पू० देवात्मा की सम्बन्ध तत्व के विषय में व्याख्या की। सम्बन्धों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। हम सब सम्बन्धों पर निर्भर हैं। उच्च और विकासकारी सम्बन्धी का सम्बन्ध जीवन को उच्च बनाता है। नीच सम्बन्धियों के सम्बन्ध से दुख, हानि और नर्क पैदा होता है। विनाश प्राप्त होता है। योग्य सम्बन्धियों से जुड़कर बरकतें मिलती हैं। विद्वान से सम्बन्ध बनाकर विद्या प्राप्त होती है। सेहतमन्द का सम्बन्ध सेहत बनाने की ओर प्रेरित करता है धनवान कों सम्बन्ध धन बढ़ाने की प्रेरणा देता है। फिर भगवान देवात्मा के सम्बन्ध की बरकतों का विस्तार से वर्णन किया और जीवन के लिए अतिशय मुबारक महसूस कराया। पाप जीवन से रक्षा और सामाजिक जीवन की स्वर्गिय बनाना देव प्रभावों की प्राप्ति के द्वारा ही सम्भव है।

शाम 5.30 बजे:- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें उन्होंने बताया कि गुरू महाराज के दर की छोटे और बड़े प्रत्येक बशर को अवश्यकता है इस दर के बिना मनुष्य का ग़ल्त जाना, अपनी और दूसरों की हानि करना अवश्यक है, चाहे

Published on 5th of the month
20
अक्तूबर - 2011
WPP - Regd. Postal No.Pb (0077) 09/011
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

उसके पास दुनिया के धन, पदार्थ, पदवी, विद्या कितनी भी हो, इसके उदाहरण दिए गए। हाजरीन प्रभावित होकर आगे ऐसे लाभ उठाने की इच्छा प्रगट कर रहे थे।

कल्याण मल्लकी:- रात 8.30 बजे यहां सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें परिवर्तन के नियम के विषय में बताया गया कि हमारा सारा अस्तित्व बदल रहा है। हृदय वा स्वभाव की तबदीली हमें कुछ का कुछ बना देती है। बुरी शक्तियों के बढ़ने से भयानक करम होने लगते हैं। उदाहरणों द्वारा बुरी तबदीली को समझाया गया हाजरीन गुरू को धन्यवाद दे रहे थे, जिनकी कृपा से ऐसे सत्यों का कुछ ज्ञान होता है।

12 तारीख सुबह:- इस सभा में पहले यह बताया गया कि हमने कुछ कुछ भेंट हररोज करनी है। पीछे जो सेवकों ने प्रण किए थे, वह सब ही भूल गए। फिर पूछा गया कि गुरू महाराज की फोटो किसके पास नहीं, हररोज गुरू को प्रणाम करना चाहिए। साधन करने का महत्व बताया गया। इतने उपकार पाकर गुरू को हररोज़ प्रणाम न करना कृतघ्नता है। भजन गाना अच्छे लेखों का पाठ करना, देव आरती वा देव स्त्रोत को समझना इसके लाभ बताए गए। बताया कि मेरे साथ के 60 साथी मर गए, मैं अभी तक अरोग्य जी रहा हूं, यह गुरू की कृपा है। किसी अंश हाजरीन ने लाभ उठाया, फिर कुछ काम निपटाकर श्रीमान जी चण्डीगढ़ के लिए रवाना हो गए।

एक सेवक

प्यारे धर्म सम्बन्धियो!

आप में से बहुत से लोगों को "एक बूढ़े जरनैल की दुख भरी अपील" नामक पुस्तक मिल गई है, वह आप फोनों के द्वारा हमें बताने की कृपा करते रहे हैं, उस दर्द को आप लोगों ने भी अनुभव किया है। मैं तो पता नहीं कितनी बार आंसू बहा चुकी हूं। परन्तु अब रोने से कुछ नहीं होने वाला, अपनी प्यारी समाज को बचाना होगा, इसके लिए सब साथी सेवकों के सहयोग की अवश्यकता है। अब सबके, चेहरों से नाकाब उठ चुके हैं। आप जो भी सहयोग कर सकते हों, अपने आपको पेश करने की कृपा करें, सुझाव दें, इस दुनियां को छोड़ने के बाद गुरू को मुंह दिखाने के हम योग्य हो सकें। आप सब की ओर उत्साह प्रदान करने का बहुत बहुत शुक्रिया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts